समसामयिक सलाह

अप्रैल

फसलोत्पादन

- ग्रीष्मकालीन मक्का की बुवाई के समय दीमक प्रभावित क्षेत्रो में खेतों को क्लोरपायरीफास 1.5 प्रतिशत चूर्ण की 25 कि. प्रति हेक्टेयर की दर से उपचारित करें
- भुट्टे के लिए मक्के की बुवाई करें।
- ग्रीष्मकालीन जुताई करें।

उद्यनिकी

- ग्रीष्मकालीन बरबटी, भिण्डी मूली एवं चौलाई आदि की बुवाई करें।
- आलू प्याज, लहसुन आदि सब्जियों की खुदाई एवं भण्डारण करें।
- कददूवर्गीय सब्जियों में चूर्णी फफूंद नियंत्रण हेतु केराथेन की छिड़काव करें।
- केले के पौधे से नीचे से निकलने वाले सकर निकाल दें।

मई

फसलोत्पादन

- खरीफ फसलो की तैयारी के लिए खेत की ग्रीष्मकालन गहरी जुताई करें।
- सिंचाई की सुविधा होने पर हरी खद के लिए सन या ढेचा की बुवाई करें।
- गन्ने के फसल में मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें।
- खरीफ फसल बोने के लिए फसलों की रुपरेखा तैयार कर उसमें लगने वाली उर्वरक की मात्रा का क्रय करें।

उद्यनिकी

- लौकी में फल मक्खी नियंत्रण के लिए कार्बोरिल घुलनशील पाउडर 50 प्रतिशत एक किलो प्रति हैक्टेयर के हिसाब से छिड़काव करें।
- लहसुन, प्याज की फसल में सिंचाई बंद कर देनी चाहिए व गांठो को सूखने देना चाहिए। सूखी हुई गांठो को निकाल लेना चाहिए।
- यदि सिंचाई का पर्याप्त साधन है तो अरबी अदरक एवं हल्दी की बुवाई करें।
- वर्षाकालीन सब्जियों की बुवाई हेतु तैयारी करें।
- आम, बेल, अन्नानास, बेर का मुरब्बा, चटनी, अचार एवं सब्जियों को सुखाने का कार्य करें।

जून

फसलोत्पादन

- सोयाबीन एवं अरहर की बुवाई के लिए खेत का चुनाव कर मिट्टी की तैयारी करें।
- दलहनी फसल बोने से पहले खेत में जल निकास की तैयारी करें।
- खरीफ फसल बोने से पहले खेत में कुपोस्ट का प्रयोग करें।
- धान के बीजो को 17 प्रतिशत नमक के घोल में डालकर ठोस बीजों का चुनाव करें तथा चयनित बीजो को दे बार स्वच्छ पानी से धोकर साफ सुपर/ काबेन्डाजिम (2 ग्राम /ली.) से उपचारित कर बोए।

उद्यनिकी

- मौसमी फूलों की पौधशाला हेतु क्यारी निर्माण एवं बीज की बुवाई करें।
- आम के विभिन्न उत्पाद जैसे नेक्टर, स्क्वैश, अचार,चटनी, अमावट आदि तैयार करें।
- बरसात फसल हेतु कददूवर्गीय सब्जियों के बीजों की बुवाई करें।
- वर्षा आरंभ होने के 10-15 दिन पूर्व गडढों की भराई (आधी मात्रा सड़ी गोबर की खाद और अधिक मात्रा मिट्टी मिलाकर) करें, गडढों को 6 इंच उपर तक भरें तथा दीमक नियंत्रण हेतु 20-25 ग्राम कीटनाशक मिलाएं।

गर्मी की जुताई - खरीफ फसल में कमाई

ग्रीष्मकाल में खेत की गहरी जुताई करने से जहां मृदा की भौतिक अवस्था में सुधार होता है वही मिट्टी की भुरभुरी हो जाने से आगे उगाई जाने वाली फसलों के जड़ो को भूमि के अंदर तक पहुचने में आसानी होने से पोषण अच्छी तरह से हो जाता है। खेत की गहरी जुताई के लिए मिट्टी पलट हल (एम.बी. प्लाऊ) का प्रयोग कर डिस्क हैरो चलाना उत्तम होता है। इस प्रकार तैयार खेत में सूर्य की ग्रीष्मकालीन धूप पड़ने से निम्नलिखित फायदा होता है।

1. खेत में उगे खरपतवार नष्ट हो जातें है, फसलों के कीट वे रोगजनकों के अण्डे व जीवाणु नष्ट हो जातें हैं मृदा के लाभदायक जीवाणुओ की सक्रियता में वृद्धि हो जाती है।
2. गहरी जुताई से फसलों के ढूंठ व अन्य अवशेष नीचे चले जाते है जो सड़ गलकर कार्बनिक खाद बनाते है।
3. इससे नीचे की मिट्टी उपर आती है जिसमें उपलब्ध पोषण तत्वो एवं अन्य पदार्थ पौधो की जड़ो को आसानी से उपलब्ध हो पाते है।
4. खेत की लगातार एक ही तल की जुताई करने से होने वाले दुष्प्रभाव भी कम हो जातें हैं।

इस प्रकार जुताई के बाद खरीफ फसलों को पूर्ण कृषि कार्यमाला के साथ उगाने से उपज बढ़ने से

केन्द्र के विषय वस्तु विशेषज्ञों से तकनीकी सलाह हेतु संपर्क करें।

किसानों के अनुभव, नई तकनीकी एवं सफलता की कहानी हेतु।

1.	डॉ. एल.एस. वर्मा	उद्यानिकी एवं कृषि	(मो.) 9406070490
2.	डॉ. असित कुमार	कृषि प्रसार	(मो.) 9826433266
3.	श्री. यूं.के पटेल	मृदा विज्ञान	(मो.) 9770613620
4.	डॉ. एस. के थापक	पौध रोग विज्ञान	(मो.) 9424257393
5.	श्री आर. एल. साहू	उद्यानिकी	(मो.) 9826679747
6.	कु. हेमलता	शस्य विज्ञान, खरपतवार एवं जल प्रबंधन	(मो.) 8821851203
7.	डॉ. (श्रीमती) कर्मणा पांडे	गृह विज्ञान, आहार एवं पोषण	(मो.) 9826249415
8.	श्री सचिन कुमार	शस्य विज्ञान	(मो.) 9179495849
9.	श्रीमती सोनिया खलखो	कम्प्यूटर	(मो.) 9479259587

बुक-पोस्ट

प्रेषक :
कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र,
अंजोरा, दुर्ग

सेवा में,
श्री/श्रीमती/डॉ. ....
....
....

इंदिरा किसान मितान

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय

कृषि विज्ञान केन्द्र अंजोरा, दुर्ग

भा.कृ.अनु.प ICAR

अंक - 1 | अप्रैल-जून ,2013 | वर्ष - 1

संपादक मंडल

संरक्षक
डॉ. एस. के पाटिल
मान. कुलपति
इं.गा.कृ.वि.रायपुर

मार्ग दर्शक
डॉ. जे.एस.उरकुरकर
निदेशक विस्तार सेवाएं
इं.गां.कृ.वि.रायपुर

प्रेरणास्त्रोत
डॉ. अनुपम मिश्रा
आंचलिक परियोजना निदेशक
जोन-7, (भा.कृ. अनु.परि.) जबलपुर

प्रधान संपादक
डॉ. एल.एस. वर्मा
कार्यक्रम समन्वयक
कृ.वि.के.अंजोरा दुर्ग

संपादक
डॉ. (श्रीमती)कर्मणा पांडे
तकनीकी सहायक
कृ.वि.के.अंजोरा

सह संपादक
डॉ. असित पाण्डे
श्री यू.के.पटेल
डॉ. एस. के. थापक
श्री रोशन साहू
कु. हेमलता
श्रीमती सोनिया खलखो
श्री सचिन कुमार

हर कदम, हर डगर किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

इंदिरा गांधी कृषि विश्व विद्यालय के अधिकारियों का कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रक्षेत्र में भ्रमण

कृषको का कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रक्षेत्र में भ्रमण

मृदा परीक्षण समय की मांग

भारत एक कृषि प्रधान देश है जिसकी 70 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। बढ़ती हुई जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए तथा उनके उपभोग की वस्तुओं की समय पर पूर्ति हेतु, किसान अपने खेतों में रासायनिक उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग कर रहा है जिससे मृदा के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है जिससे मृदा स्वास्थ्य में निरंतर गिरावट आ रही है। परिणामतः जिसके कारण खेत बंजर होते नजर आने लगे है। उपभोग के लिए आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति हेतु यह आवश्यक है कि मृदा में कार्बनिक खादों व रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करे जिससे उत्पादकता बनी रहें। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए मृदा का परीक्षण अनिवार्य हो गया है।

मृदा परीक्षण के लिए उपयुक्त स्थान :

1. गांवों व शहरों के समीप कृषि विज्ञान केन्द्र या कृषि महाविद्यालय।
2. कृषि अनुसंधान संस्थान
3. तहसील या जिला मुख्यालय पर मृदा परीक्षण प्रयोगशालाएं

मृदा परीक्षण का उचित समय :-

फसल के अच्छे उत्पादन के लिए जरुरी है कि मृदा का परीक्षण खरीफ या रबी फसल की बुवाई से पूर्व करवाये। अच्छा उत्पादन लेने के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक किसान तीन साल में कम से कम एक बार मृदा परीक्षण जरुर करवाएं। (कृषि अनुसंधान के अनुसार)

मृदा नमूना एकत्र करना:-

मृदा परीक्षण करते समय मृदा का नमूना उचित ढंग से लिया जाना चाहिए जिससे कि मृदा परीक्षणों को उचित ढंग से निष्कर्षित किया जा सकें। इसके लिए खेत से प्राथमिक नमूना लेने के लिए मौके पर चयन द्वारा खेत को प्रति हेक्टेयर 15-20 स्थानो पर चिन्हित कर लिया जाता है तथा अंग्रेजी के वी आकार का लगभग 15 सेमी गहरा गड्डा खोदकर खुरपी की सहायता से ऊपर से नीचे तक (0-15 सेमी.) लगभग 1.5 से.मी. समान मोटाई की पर्त निकाल लेनी चाहिए। इन नमूनों को प्लास्टिक की बाल्टी या तसले में इकट्ठा कर लिया जाता है फिर इसमें से कंकड़-पत्थर, घास-फूस आदि को अलग कर दिया जाता है तथा मिट्टी को मिलाते हुए ऊपर से नीचे तक एक समान मोटाई की पर्त बना देते है एवं इसे गोलाई में करके गोले को चार बराबर भागो में एक दूसरे के लम्बवत दो व्यास खींचकर बांट देते है और आमने-सामने के दो भागों को फेंक देते है। इस प्रक्रिया को दोहराते हुए करीब 500 ग्राम वजन का नमूना तैयार
इस नमूने को किसान एवं खेत का विवरण देते हुए समीपस्थ मृदा परीक्षण प्रयोगशाला में भेजन

Created using easyPDF Printer
Click here to purchase a license to remove this image

विगत तीन माह की गतिविधियां एवं प्रस्तावित गतिविधियां

कृषक व ग्रामीण महिलाओं एवं युवाओं के लिए प्रशिक्षण

	विगत तीन माह की गतिविधियां			आगामी तीन माह की गतिविधियां		
	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
फसल उत्पादन	-	-	-	02	02	60
कृषि विस्तार	-	-	-	03	03	90
पौध रोग	03	03	67	02	02	60
उद्यनिकी	-	-	-	03	03	90
मृदा विज्ञान	03	03	110	03	03	90
गृह विज्ञान	02	02	48	02	04	60
किसान संगवारी प्रशिक्षण	25	25	637	-	-	-

प्रक्षेत्र अनुसंधान परीक्षण

फसल	विगत तीन माह की गतिविधियां
परीक्षण	लाभान्वित
गेहूं फसल में वर्मी कम्पोस्ट द्वारा उत्पादकता पर प्रभाव	04
अभासीय कंडवा रोग का रासायनिक विधी द्वारा रोकथाम का आंकलन।	04
चना में एस्कोकाइटा ब्लाइट रोग के नियन्त्रण हेतु फफूंदनाशक का आंकलन	04
ग्रामीण क्षेत्र में विटामिन एवं खनिज लवणयुक्त खाद्य पदार्थो का आंकलन	03

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

फसल	विगत तीन माह की गतिविधियां	
	लाभान्वित	क्षेत्रफल/हे.
गेंहू फसल में जिंक सल्फेट उपयोग से उत्पादकता पर प्रभाव	12	4.8
गभोट अवस्था एवं बाली निकलने की अवस्था पर फफूंदनाशी ट्राइसाइक्लाजोल 0.06 प्रतिशत घोल का छिड़काव	12	4.0
उन्नत किस्म से गेहूँ की उत्पादकता में वृद्धि	10	4.0
आयस्टर मशरुम उत्पादन तकनीक	03	-

प्रस्तावित प्रक्षेत्र प्रदर्शन

फसल	प्रस्तावित गतिविधियां	
	लाभान्वित	क्षेत्रफल /हे
मृदा परीक्षण के आधार पर धान फसल में अम्लीय मृदा में चूना प्रयोगकर उत्पादकता में प्रभाव	04	0.8 हें.
कृषिगत क्रियाओं में परंपरागत तकनीक का आंकलन	-	-
किसान मोबाईल संदेश के प्रभाव का आंकलन	-	-
रोपित धान में हरी खाद के प्रभाव का आंकलन	04	.8
सोयाबीन में खरपतवार प्रबंधन	04	.8

प्रस्तावित अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

फसल	लाभान्वित	क्षेत्रफल/हे
धान फसल में जैव उर्वरक प्रयोग कर उत्पादकता पर प्रभाव	12	4.8 हे.
धान में मेडागास्कर विधि का प्रयोग	8	5 हे.
मौसमी फल एवं सब्जी परिरक्षण	03	-
उन्नत किस्म से सोयाबीन (किस्म जे.एस.9305) की उत्पादकता में वृद्धि	10	4.0
उन्नत किस्म से अरहर (किस्म राजीव लोचन) की उत्पादकता में वृद्धि	10	4.0

कृषक प्रशिक्षण

महिला प्रशिक्षण

कृषक संगवारी प्रशिक्षण

रावे विद्यार्थियो का प्रशिक्षण केन्द्र के प्रक्षेत्र में कृषक भ्रमण

जैविक खेती : आज की आवश्यकता

कृषि उत्पादन को लगातार बढ़ाना आज कृषि वैज्ञानिको के सामने सबसे बड़ी चुनौती है। सघन खेती से मृदा में पोषक तत्व धीरे-धीरे कम होते जा रहे है इस कमी को रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से पूरा किया जाता है। अधिकांश किसान संतृप्त मात्रा में रासायनिक खाद के उपयोग के बावजूद इष्टतम उत्पादन से वंचित है। रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से होने वाला लाभ घटता जा रहा है। साथ ही मृदा स्वास्थ्य पर भी विपरीत असर दिखलाई पड़ रहा है, जिससे देश में खेती हेतु खतरा पैदा हो रहा है। इन परिस्थितियों में खेती में जैविक खाद का प्रयोग करना एक मात्र विकल्प के रुप में उभरकर सामने आ रहा है। जैविक खेती के प्रमुख घटकों पर संक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत है -

हरी खाद :- हरी खाद के रुप में सन,ढैंचा, सिसबेनिया, रोस्ट्रौटा उपयुक्त है। जहां सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो तथा धान की रोपा पद्धति अपनाई जाती हो, वहां हरी खाद का उपयोग लाभकारी है। ढैंचा बीज 30-35 कि. ग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से बोकर बुवाई के 25-40 दिन बाद फसल को मिट्टी में मिलाने से 40-50 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर नत्रजन पौधो को उपलब्ध होती है।

नीलहरित काई :- एक प्रकृति जैविक खाद है जो वायुमंडलीय नत्रजन को शोषित कर धान फसल को 25-30 कि.ग्रा./ हेक्टर नत्रजन की पूर्ति करता है। नील हरित काई का सूखा पावडर कृषि विभाग या कृषि विश्वविद्यालय रायपुर में उपलब्ध है। नील हरित काई के सूखे पावडर को बियासी या रोपाई के 7-10 दिनो के अंदर खेत में समान रुप से रेत में मिलाकर छिड़कना चाहिए। एक हेक्टर के लिए 10 कि.ग्रा. नील हरित काई पावडर पर्याप्त है। रोपाई या बियासी के समय स्फुर (सुपर फास्फेट) की पूरी मात्रा देना चाहिए। नील हरित काई से उपचारित करने के बाद 20 से 30 दिनो तक खेत में 3-4 से.मी पानी का स्तर होना जरुरी है।

राइजोबियम कल्चर :- राइजोबियम कल्चर जीवाणु खाद का उपयोग मुख्यतः द्विदलीय फसले जैसे चना, मूंग, उड़द, सोयाबीन, अरहर, मूंगफली, मसूर, मटर आदि में किया जाता है। जीवाणु खाद से बीज को बुवाई के पहले उपचारित करते है। उपचार के बाद बीज छांव में रख दिया जाता है तत्पश्चात बुआई करते है।। साधारणतः 5 ग्राम जीवाणु खाद प्रति किलो ग्राम बीज हेतु पर्याप्त है। विभिन्न फसलों के लिए अलग-अलग फसल के अनुसार जीवाणु खाद मिलती है। अतः पैकेट देखकर खरीदना चाहिए।

स्फुर घोलक जीवाणु (पी.एस.बी.कल्चर):- स्फुर घोलक जीवाणु द्वारा रोपा लगाने के पूर्व धान पौध की जड़ो या बीज को बोने के पहले उपचारित किया जाता है। बीज उपचार हेतु 5-10 ग्राम कल्चर/ किलोग्राम बीज दर से उपचारित करें। रोपा पद्धति में धान की जड़ों को धोने के बाद 300-400 ग्राम कल्चर का भूमि में सीधे उपयोग की अपेक्षा बीजोपचार या जड़ो का उपचार लाभकारी होता है।

जैविक उर्वरक के उपयोग से लाभ:- रासायनिक उर्वरक के उपयोग में कमी होती है। इनके प्रयोग से 25-30 कि.ग्रा./हे. नाइट्रोजन एवं 25-30 कि.ग्रा. प्रति हेक्टर फास्फोरस की उपलब्धता बढ़ती है तथा मृदा की भौतिक एवं रासायनिक दशाओं में सुधार होता है। विभिन्न फसलो में 25-30 प्रतिशत तक उपज में वृद्धि होती है तथा बीज अंकुरण शीघ्र होता है एवं कल्लो की संख्या में वृद्धि होती है। गन्ने में शर्करा एव तिलहनी फसलो में तेल तथा मक्का एवं आलू में स्टार्च की मात्रा में बढ़ोत्तरी होती है जिससे किसानो को आर्थिक लाभ होता है।

आम का मुरब्बा

कच्चे आमों से कई प्रकार के अचार. चटनी, और मुरब्बा बनाये जाते है, जिन्हे हम साल भर तक रख कर खाने के प्रयोग में लाते है रहते है .अभी आम का मौसम चल रहा है बच्चो को मीठे अचार और मुरब्बा बहुत पसन्द आते है, मुरब्बा बनाने के लिये बिना रेशे के अच्छे, सख्त आम ही अच्छे रहते है।

आवश्क सामग्री - आम- 1 किग्रा. (7-8)

- नमक 2 छोटी चम्मच
- केसर - एक चौथाई छोटी चम्मच (यदि आप चाहे तो)
- चीनी- 1 किग्रा.
- छोटी इलाइची - 4-5

विधि -

आमों को धो कर, 12 घन्टो के लिये पानी में भिगो दीजिये, आमों को पानी से निकालिये एवं सुखा लीजिये। आम को अच्छी तरह छील लीजिये, हरा छिलका बिलकुल न रहने पाये। छिले हुये आमों से बड़े बड़े टुकड़े काट लीजिये, इन टुकड़ों में फोर्क से छेद बना लीजिये। एक बर्तन में इतना पानी लीजिये कि आम इसमें डूबे रहे। पानी में नमक डाल दीजिये, कटे हुए आमो को इस पानी में डुबा कर रात भर या 12 घंटो के लिये रख दीजिये। नमक के पानी से आम निकाल कर दो बार धोइये, चलनी में रखकर पानी निकाल दीजिये। किसी बर्तन में इतना पानी गरम करने रखिये कि आम इसमें डूब जाये। पानी में उबाल आने के बाद आम के टुकड़ो को पानी में डाल दीजिये, इन्हे 3-4 मिनट तक उबलने दीजिये। आमों को चलनी में निकालिये और सारा पानी निकाल दीजिये।

अब किसी भगोने में आम के टुकड़ो को केसर और चीनी के साथ मिलाकर 2 दिन के लिये रख दीजिये। प्रत्येक 12 घंटो बाद चमचे से अच्छी तरह चला दीजिये। चीनी का रस तैयार है, इस घोल को आम के टुकड़ो सहित गैस पर पकने रख दीजिये। 10-15 मिनिट में चीनी का घोल गाढ़ा हो जाता है। (चीनी का घोल इतना गाढ़ा हो जाय कि उसे आप चमचे से प्लेट में एक बूंद गिराये और अपने हाथ के उंगली और अंगूठे के बीच चिपका कर देखे. और जब उंगली और अंगूठे को अलग करे तो एक तार बनना चाहिये, इसे तार की चाशनी कहा जाता है) गैस बन्द कर दें, आम का मुरब्बा बन चुका है मुरब्बा को ठंडा होने के बाद, इलायची छील कर कूट लीजिये और इसे मुरब्बे में मिला दीजिये आम का खूशबूदार मुरब्बा किसी कांच या प्लास्टिक के कन्टेनर में भर कर रख दीजिये।

आम का पना

सामग्री -

दो कच्चे आम (कैरी), 8 चम्मच शक्कर, भुना जीरा दो चम्मच, पानी दो कप, सेधा नमक एक चम्मच, लाल मिर्च स्वादानुसार, आइस क्यूब चार - पांच

विधि -

थोड़ा सा पानी डालकर आम को अच्छी तरह उबाल ले। छीलकर व गुठली अलग कर इसके गूदे में शक्कर डालकर मिक्सी में चलाएँ। फिर इसमें दो कप पानी व अन्य सामग्री मिलाएं। आम का पना तैयार है। इसमें आइस क्यूब डालकर सर्व करें।

Created using easyPDF Printer
Click here to purchase a license to remove this image